ISSN 2349-9354

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

जनवरी-मार्च 2016

वर्ष-48 ◐ अंक-4

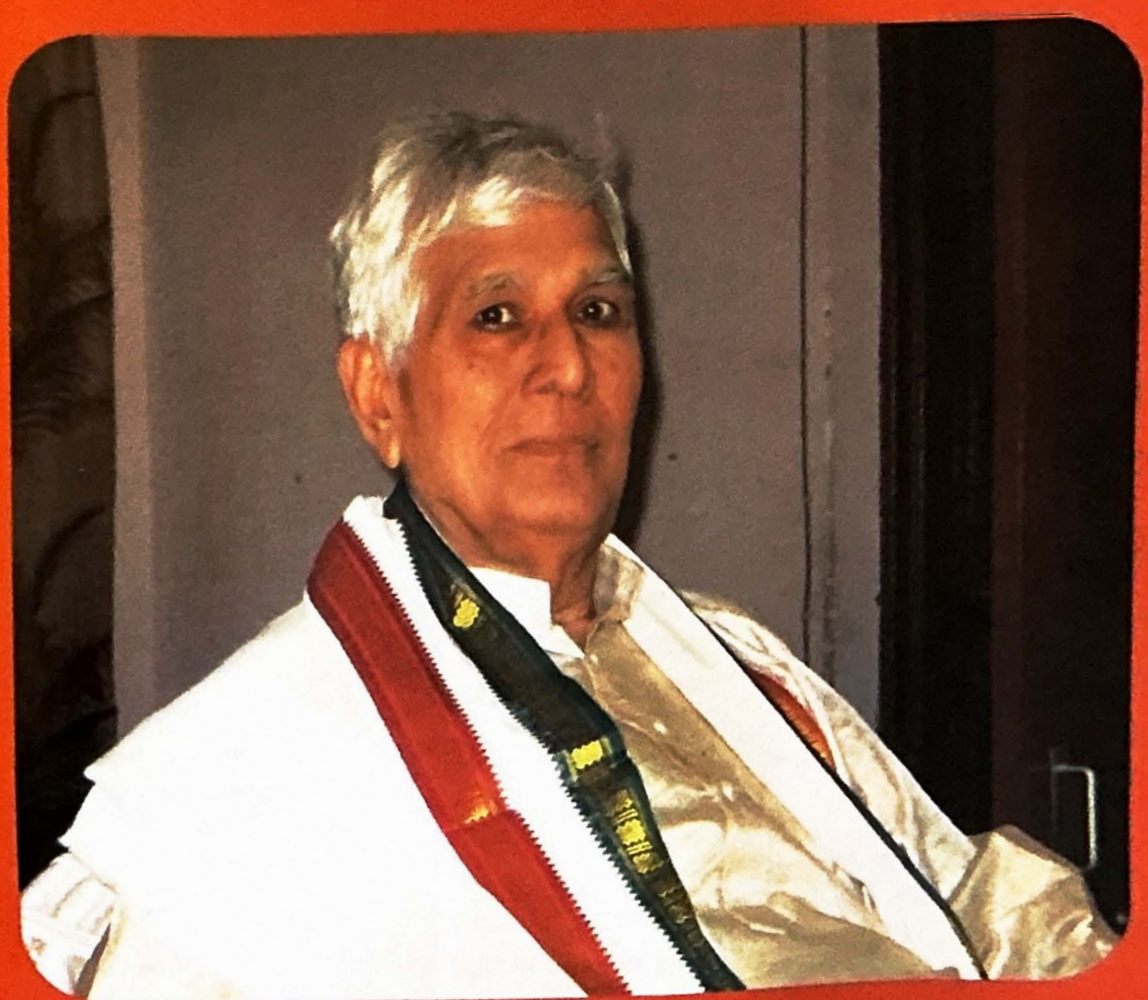

गोपाल राय स्मृति अंक

समीक्षा

समीक्षा एवं शोध त्रैमासिक

जनवरी-मार्च, 2016

वर्ष 48, अंक 4

गोपाल राय स्मृति अंक

संस्थापक सम्पादक

गोपाल राय

सम्पादक

सत्यकाम

संयुक्त सम्पादक

अमिताभ राय

प्रबन्धन

सीमा

समीक्षा

ISSN : 2349-9354

जनवरी-मार्च, 2016

वर्ष: 48, अंक : 4

प्रकाशन तिथि : 15 मार्च, 2016

मूल्य :

एक प्रति: *तीस रुपये*

संस्थाओं के लिए : *पचास रुपये*

वार्षिक सदस्यता : *दो सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

संस्थाओं के लिए : *तीन सौ रुपये (डाक खर्च सहित)*

आजीवन सदस्यता : *पांच हजार रुपये (डाक खर्च सहित)*

इस अंक का मूल्य:

व्यक्तिगत: पचास रुपये

संस्था: सौ रुपये

सम्पर्क:

समीक्षा

द्वारा *अमिताभ राय*

ए-305, प्रियदर्शिनी अपार्टमेन्ट,

17-इन्द्रप्रस्थ प्रसार,

पटपड़गंज, दिल्ली-110092

मोबाइल : 09582502101

ईमेल : sameekshatraimasik@gmail.com

निवेदन: कृपया सारे भुगतान केवल बैंक ड्राफ्ट अथवा ई-ट्रांसफर द्वारा निम्न चालू खाता संख्या: 2257002100004645, IFSC Code : PUNB0225700, पंजाब नेशनल बैंक, इग्नू, मैदानगढ़ी, दिल्ली-110068 में कीजिए। बैंक ड्राफ्ट 'समीक्षा' को नई दिल्ली में देय होगा। ड्राफ्ट उपरोक्त पते पर भेजें।

पत्रिका का अंक न मिलने पर इसकी सूचना उपरोक्त पते पर दें अथवा उपर्युक्त नं. पर सम्पर्क करें।

'समीक्षा' में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। सम्पादक, संयुक्त सम्पादक पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायाधिकरण, दिल्ली होगा।

अनुक्रम

सम्पादकीय

हिन्दी साहित्य के पुरातत्ववेत्ता: गोपाल राय — 4

धरोहर: समीक्षा

समीक्षा: इकतीस सालों का सफर — गोपाल राय — 14

क्यों नहीं साफ हो रही 'हिंदी' पद की अवधारणा — गोपाल राय — 25

घर-परिवार

जौ लरिका कुछ अचगरी करहीं — ऋत्विक — 32

उड़ गये फुलवा रह गये वास — रागिनी सांकृत — 33

सन्नाटे का छंद — सत्यकेतु सांकृत — 36

यादों के कोने में

मेरा हमदम मेरा दोस्त — मुचकुंद दुबे — 46

स्मृति-शेष बंधुवर — निर्मला जैन — 48

लोकतांत्रिक और पेशेवर ईमानदारी — प्रदीप सक्सेना — 51

जैसा मैंने देखा — अहमद रज़ा खान — 52

मत पूछ कि क्या हाल है मेरा तेरे पीछे — सलिल मिश्र — 54

पत्रों में प्रतिबिम्बित व्यक्तित्व — वेदप्रकाश अमिताभ — 60

मेरे गुरुदेव, गाइड और बाबूजी — सकलदेव शर्मा — 63

जीवन और लेखन प्रेरणादायी है — कृष्ण चन्द्र लाल — 68

मेरे प्राध्यापक — कर्मेन्दु शिशिर — 71

ऐसे थे हमारे सम्माननीय — तरुण कुमार — 73

कर्मठ साहित्य-साधक — अजय तिवारी — 75

एक साहित्य-साधक के साथ संवाद — पूनम सिन्हा — 77

कर्म का वह प्रकाश, जिसे अंधेरा कभी ढँक नहीं सकेगा — रीता सिन्हा — 82

रचनात्मक संसार

समावेशी दृष्टि से लिखा हिन्दी उपन्यास का इतिहास — मैनेजर पाण्डेय — 85

(हिन्दी उपन्यास का इतिहास)

इतिहासकार गोपाल राय — अमिता पाण्डेय — 89

(हिन्दी उपन्यास का इतिहास/हिन्दी कहानी का इतिहास : भाग-1, 2, 3)

उपन्यास की संरचना: संदर्भ-प्रेमचन्द के उपन्यासों की यथार्थवादी संरचना — पूनम सिन्हा — 93

(उपन्यास की संरचना)

अज्ञेय को ज्ञेय बताने का प्रयास (अज्ञेय और उनके उपन्यास)	लव कुमार	98
हिन्दी भाषा का विकास (हिन्दी भाषा का विकास)	एम. शेषन	101
हिन्दी कथा-साहित्य: अन्वेषण एवं विश्लेषण (हिन्दी साहित्य और उसके पाठकों पर रुचि का प्रभाव)	राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय	106
रंगभूमि की वैचारिकी बरजिए गोपाल (रंगभूमि: पूनर्मूल्यांकन)	बजरंग बिहारी तिवारी	112
पचास साल बाद एक आलोचना पुस्तक का महत्त्व (गोदान: नया परिप्रेक्ष्य)	जितेन्द्र श्रीवास्तव	114
दिव्या: इतिहास, कल्पना और स्त्री प्रश्न (उपन्यास की पहचान: दिव्या)	कल्पना पन्त	117
नाटकीय विधान के रूप में उपन्यास की महत्ता (उपन्यास की पहचान: महाभोज)	प्रणव कुमार ठाकुर	120
बहुवर्णी व्यक्तित्व पर रोशनी डालने का प्रयास	लव कुमार	123
अज्ञेय के कथा साहित्य का मूल्यांकन (अज्ञेय और उनका कथा साहित्य)	हेमराज कौशिक	125
समीक्षा का महत्त्व	पी. जयसिंह	130
हिन्दी-उर्दू साहित्य की विरासत की पड़ताल (उन्नीसवीं शताब्दी का हिन्दी साहित्य)	वेंकटेश कुमार	133
श्रमशील साधक	अमिताभ राय	136
साक्षात्कार		
किसी समाज का बौद्धिक स्तर उसकी आलोचना से नापा जा सकता है	प्रकाश मनु	140
श्रद्धांजलि	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	100

हिंदी साहित्य के पुरातत्ववेत्ता: गोपाल राय

गोपाल राय को मैंने निकट से देखा है, अभिन्न अंग रहा हूँ, कवच-कुंडल रहा हूँ, सारथी रहा हूँ, विद्यार्थी रहा हूँ, पुत्र तो प्रकृति प्रदत्त रहा, पर आज मैं इन सबसे अलग उन्हीं के शब्दों में 'अपने अवलोकन बिंदु से अपने 'विजन' से उनके ही शब्दों में दृश्यात्मक नहीं परिदृश्यात्मक प्रविधि में गोपाल राय को साहित्यिक यात्रा का मूल्यांकन करने की हिमाकत करने जा रहा हूँ। यहाँ वे न मेरे पिता हैं न मैं उनका पुत्र हूँ बस एक साहित्यकर्मी का दूसरे साहित्यकर्मी को देखने का यह दुस्साहस है, जो मुझे भी लहुलुहान करेगा पर मैं चाहूँगा कि मैं उनके साहित्यिक कर्म को अपनी नजर से आपके समक्ष रख दूँ, बाकी आपकी मर्जी।

'उपन्यास का इतिहास' (प्रथम संस्करण 2002, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली) से प्रकाशित हुआ तो किसी ने लिखा कि इसमें कोई 'विजन' नहीं है। लेकिन आलोचक कौन-सा विजन खोज रहे थे, वे स्पष्ट नहीं कर पाए और खुद विजन भ्रांति के शिकार हो गए। गोपाल राय की साहित्यिक प्रवृत्ति मूलत: 'खोजी' की रही है और इसी खोजी प्रवृत्ति ने उन्हें 'इतिहासकार' या कहें पुरातत्ववेत्ता बनाया। हिन्दी साहित्य में उनके जैसा 'पुरातत्ववेत्ता', 'संग्रहकर्ता' और 'शोधकर्मी' दूर-दूर तक नजर नहीं आता।

'उपन्यास का इतिहास' इसका प्रमाण है जिसके बारे में यह सत्य है कि इसमें तथ्य पूर्णत: प्रमाणिक हैं क्योंकि सभी पुस्तकों के प्रथम संस्करण को प्रत्यक्षत: देखकर उसे 'इतिहास' में शामिल किया गया है। गोपाल राय की राय से असहमत हुआ जा सकता है पर तथ्यों की प्रामाणिकता असंदिग्ध है। मैं इसका साक्षी हूँ। यह ऐसा ग्रंथ है जिसने न केवल शोधकर्ताओं की राय आसान कर दी है बल्कि उन्हें तैयार माल उपलब्ध करा दिया है। यह हिन्दी उपन्यास की वीकिपीडिया है जिसमें 1801 से 2000 तक के हिन्दी उपन्यास शामिल हैं।

गोपाल राय आरंभ से अथक परिश्रमी थे और उनके इस लगन को परखा आचार्य नलिन विलोचन शर्मा ने। उन्होंने गोपाल राय को शोध के लिये तीन विषय दिये- सूफी काव्य, भाषा विज्ञान और उपन्यास। गोपाल राय ने सूफी साहित्य पर कुछ काम किया पर जल्द ही उन्हें अहसास हुआ कि बिना फारसी जाने सूफी काव्य पर ईमानदारी से काम नहीं किया जा सकता। वे मूल तक जाना चाहते थे, शोध के लिये द्वितीय स्रोतों 'Secondary Sources' का कभी सहारा नहीं लेना चाहते थे। आगे भी कभी नहीं लिया। भाषा विज्ञान की तरफ झुकाव था पर नलिन जी ने यह विषय अनंतलाल चौधरी को दे दिया जो भाषा विज्ञान के अद्वितीय शिक्षक सिद्ध हुए। गोपाल राय को मिला उपन्यास और शोध का विषय मिला "हिन्दी कथा साहित्य के विकास में पाठकों की रूचि का प्रभाव।"

विषय मिला और चल पड़ा योद्धा युद्ध क्षेत्र में। नागरी प्रचारिणी सभा को अध्ययन अड्डा बनाया। बताया करते थे बाबूजी कि "मैं सुबह-सुबह पुस्तकालय पहुँच जाता था। वहीं रात तक पढ़ता। बीच में भोजनावकाश के समय और छुट्टियों के दिन चपरासी बाहर से दरवाजा लगाकर चला जाता था।" इसके बाद शुरू हुई पाठकों के सर्वेक्षण की यात्रा। जगह-जगह घूमे। इलाहाबाद 'साहित्य सम्मेलन' का दरवाजा खटखटाया। अपने मित्र मुचकुंद दुबे के ससुराल में टिके। व्हीलर बुक के स्टालों से पाठकों के बारे में 'Feed back' लिया और इसके बाद तैयार हुआ हिन्दी का ऐसा शोध प्रबंध जो हिन्दी साहित्य में न तो पहले उपलब्ध था और न ही किसी ने बाद में इस पर काम किया। पाठकों के सर्वेक्षण पर आधारित कोई शोध कार्य हिन्दी में इसके बाद नहीं हुआ क्योंकि इसमें 'Field work' की जरूरत होती है, जिसे हिन्दी साहित्य के आज के शोधार्थी नहीं जानते। वे केवल 'library work' या 'cut & paste' पर भरोसा करते हैं। कभी-कभी तो किसी और की थीसिस ही गड़प जाते हैं। ऐसे लोग प्रोफेसर भी बने बैठे हैं।